दैनिक जागरण

लक्ष्य के लिए योजना बनाएं और फिर योजना अनुरूप कार्य करें

जरूरी है जनसंख्या रजिस्टर

एक ऐसे समय जब असम में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानी एनआरसी पर काम हो रहा है तब राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर अर्थात एनपीआर की तैयारी स्वागतयोग्य है। यह काम इसलिए होना चाहिए ताकि उन हालात से बचा जा सके जिनसे आज असम दो-चार हो रहा है। जहां एनआरसी यह बताएगा कि कौन देश का नागरिक है वहीं एनपीआर देश में रहने वालों की पहचान सुनिश्चित करेगा। बेहतर होता कि देश में रहने वालों की पहचान तय करने का काम पहले ही कर लिया जाता। चूंकि यह नहीं किया गया इसीलिए आज असम में यह बताना मुश्किल है कि कौन देश का नागरिक है और कौन बांग्लादेश से आकर वहां बस गया है? चूंकि किसी भी देश के नागरिकों और निवासियों में भेद होता है और उनके अधिकार भी अलग-अलग होते हैं इसलिए एनपीआर बनना ही चाहिए। पता नहीं भविष्य में असम की तरह शेष देश में नागरिक रजिस्टर तैयार करने की जरूरत पड़ेगी या नहीं, लेकिन अगर कभी पड़ी तो उसका आधार जनसंख्या रजिस्टर ही बनेगा।

आज जैसे असम में यह जानना कठिन है कि किसे नागरिक के तौर पर देखा जाए और किसे निवासी के रूप में वैसे ही स्थिति देश के कुछ अन्य हिस्सों में भी बन रही है। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि दूसरे देशों से वैध-अवैध तरीके से भारत आकर बसने वालों की पहचान का कोई तंत्र नहीं बन सका। बांग्लादेश से लाखों लोगों की घुसपैठ ने असम समेत पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों और साथ ही पश्चिम बंगाल में जो गंभीर समस्याएं खड़ी कीं वे किसी से छिपी नहीं। ये लाखों लोग देश के संसाधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं और उसके चलते पूर्वोत्तर राज्यों के नागरिक अपने अधिकारों का हनन होते हुए देख रहे हैं। वे अपनी सांस्कृतिक पहचान बचाए रखने के लिए भी चिंतित हैं। विडंबना यह है कि इस चिंता की अनदेखी कर कुछ लोग बाहर से आने वालों के प्रति नरमी बरतने का उपदेश देने में लगे हुए हैं। वे रोहिंग्या के प्रति भी उदारता बरतने की वकालत कर रहे हैं। यह ठीक नहीं। भारत कोई धर्मशाला नहीं कि जो चाहे, यहां आकर बस जाए और संसाधनों की तंगी को बढ़ाने का काम करे। आखिर जब पश्चिम के धनी देश अवैध प्रवासियों के प्रति सख्त हैं तो भारत क्यों उनके प्रति उदारता बरते और वह भी तब जब वे सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हों। राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर की तैयारी अच्छी बात है, लेकिन इसी के साथ सीमाओं की सुरक्षा पर भी ध्यान देना जरूरी है। यह अच्छा नहीं हुआ कि हजारों रोहिंग्या पूर्वोत्तर के सीमावर्ती इलाकों से घुसपैठ कर जम्मू जाकर बस गए और किसी को कुछ पता नहीं चला।

मिलावट का धंधा

पिछले कुछ महीनों में पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े थोक बाजार कोलकाता स्थित बड़ाबाजार, उससे सटे जोड़ाबागान से लेकर उल्टाडांगा इलाके तक में मिलावटी मसाले के धंधे का भंडाफोड़ हुआ है। अब तक हजारों किलोग्राम मिलावटी मसाले जब्त किए गए हैं और कई लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है। बावजूद इसके मिलावट के कारोबार पर लगाम नहीं लग पा रही है। मिलावट का यह कारोबार इतना खतरनाक है कि लोग रसायन मिले मसाले खाकर बीमार पड़ रहे हैं। शुक्रवार को इंफोर्समेंट ब्रांच (ईबी) ने काशीपुर थाना इलाके में ऐसे ही एक कारखाने का भंडाफोड़ करते हुए 900 किलोग्राम मिलावटी मसाले जब्त कर प्रदीप सिंह नामक शख्स को गिरफ्तार किया। दरअसल 25 जुलाई को उल्टाडांगा इलाके में नकली मसाला कारखाने का भंडाफोड़ हुआ था। वहां से जीतेंद्र कहार नामक एक युवक को गिरफ्तार किया गया था। कहार से पूछताछ में इस कारखाने का पता चला। इसके बाद छापामारी कर प्रदीप सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। मौके से 700 किलोग्राम हल्दी पाउडर, 50 किलो जीरा पाउडर, 50 किलो साबुत धनिया, 15 किलो धनिया पाउडर, 80 किलो चावल आटा, 25 किलो पीला रंग और 15 किलो लाल रंग बरामद किया गया है। प्रदीप सिंह ने पूछताछ में बताया कि खराब गुणवत्ता वाले चावल को पीसकर उसमें रंग मिलाने के बाद उसे मसाले में मिक्स कर दिया जाता था। इससे यह पकड़ना मुश्किल हो जाता था कि मसाले मिलावटी हैं। इससे मसालों का वजन भी बढ़ जाता था और खर्च भी बहुत कम पड़ता था। कोलकाता में इस तरह के मिलावटी मसालों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। यह तो पिछले कुछ माह से थोड़ी निगरानी बढ़ाई गई है तो एक के बाद एक खुलासे हो रहे हैं। अन्यथा रसायन एवं कृत्रिम रंग मिले मसाले खाकर न जाने कितने लोग बीमार हुए होंगे। पुलिस भी मान रही है कि लंबे समय से मिलावटी मसाले तैयार करने का कारोबार चल रहा है। रंग और रसायन का प्रयोग कर हल्दी, जीरा पाउडर और मिर्च पाउडर तैयार किया जाता था। मसाले में चावल पाउडर, आटा व मैदा का भी प्रयोग किया जाता था। इसके बाद उसके ऊपर रंग और सुगंध के लिए रसायन का छिड़काव कर दिया जाता था। तैयार मिलावटी मसालों को पैकेट में भरकर राज्य के विभिन्न जिलों में भेज दिया जाता था। ईबी के अनुसार मिलावटी मसाला बनाने का कारोबार महानगर के कई और स्थानों पर भी हो सकता है।

अर्थव्यवस्था की सुस्ती का निदान

संजय गुप्त

इससे इन्कार नहीं कि उद्योग-व्यापार जगत का मनोबल बढ़ाने की जरूरत है, लेकिन यह भी ध्यान रहे कि आज की सबसे बड़ी समस्या दो नंबर की अर्थव्यवस्था है

लोकसभा चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत का कारण केवल कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की कमजोरी ही नहीं थी, बल्कि देश की जनता और खासकर निर्धन तबके के साथ-साथ निम्न-मध्यम और मध्य वर्ग का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा था। यह भरोसा मोदी सरकार की ओर से पांच साल में किए गए कार्यों की वजह से उपजा। 2014 में जब मोदी ने सत्ता संभाली थी तो आर्थिक माहौल बेहतर नहीं था। मोदी ने आर्थिक माहौल को बेहतर बनाने के साथ गरीबों के कल्याण के लिए तमाम योजनाएं चलाईं। मोदी सरकार की जिन योजनाओं ने जमीन पर असर दिखाया उनमें आवास, शौचालय, बिजली संबंधी योजनाओं के साथ उज्ज्वला, जनधन, आयुष्मान भारत योजना प्रमुख हैं। इन योजनाओं के अतिरिक्त आम चुनाव के ठीक पहले शुरू की गई किसान सम्मान निधि योजना ने भी अपना असर दिखाया। इस योजना के तहत छोटे किसानों को सालाना छह हजार रुपये दिए जा रहे हैं। किसान सम्मान निधि योजना की राशि और साथ ही सब्सिडी का पैसा नकदी हस्तांतरण के तहत लोगों के खाते में सीधे पहुंचने का एक लाभ यह हुआ कि इन योजनाओं में भ्रष्टाचार की गुंजाइश खत्म हो गई। इससे भी लोगों का मोदी सरकार पर भरोसा बढ़ा और भाजपा को प्रचंड जीत मिली, लेकिन इस सरकार के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के साथ ही अर्थव्यवस्था में सुस्ती ने जिस तरह सिर उठाना शुरू किया उसके आम बजट से दूर होने की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उलटे बजट के कुछ प्रावधानों और खासकर अति अमीरों से ज्यादा टैक्स लेने की नीति ने उद्योग-व्यापार जगत को हतोत्साहित करने का काम किया। इसके अलावा भी कई अन्य ऐसे संकेत सामने आ गए हैं जो अर्थव्यवस्था में सुस्ती को प्रकट कर रहे हैं, जैसे रेटिंग एजेंसी क्रिसिल द्वारा विकास दर का अनुमान घटा कर 6.9 प्रतिशत करना और शेयर बाजार में गिरावट जारी रहना।

यदि हम अर्थव्यवस्था में सुस्ती के कारणों की तह में जाएं तो पाएंगे कि पिछले एक दशक के आर्थिक हालात का विपरीत असर मोदी सरकार के पहले कार्यकाल के आखिरी समय पड़ा। उद्योगों के बीमार होकर बंद होने और उद्योगपतियों द्वारा भारी-भरकम कर्ज लेकर उसे चुकाने से इन्कार करने अथवा खुद को विलफुल डिफाल्टर में तब्दील करने से हालात और खराब हुए। इस सबके बीच वित्तीय संस्था आइएलएंडएफएस के फेल होने से स्थितियां और उलझ गईं। हालांकि मोदी सरकार दीवालिया संहिता कानून लेकर आई और उसमें निरंतर सुधार भी किए, लेकिन उसके सकारात्मक नतीजे आने में समय लगेगा। आज स्थिति यह है कि अर्थव्यवस्था के लिए जितनी पूंजी चाहिए उतनी की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। अर्थव्यवस्था की मौजूदा हालत को देखते हुए ऐसी भी स्थिति आ सकती है कि लोगों को अपने छोटे कर्ज चुकता करने में परेशानी का सामना करना पड़े। अगर ऐसा हुआ तो बड़े कर्ज के साथ-साथ छोटे कर्ज भी बट्टे खाते में जा सकते हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि निजी क्षेत्र में निवेश लगभग बंद सा पड़ा है और देश के दो सबसे बड़े उद्योग ऑटोमोबाइल और रियल एस्टेट मंदी के दौर से गुजर रहे हैं। ये दोनों ही सेक्टर लगभग 60 से 65 प्रतिशत रोजगार प्रदान करते हैं। तमाम अर्थशास्त्रियों का मानना है कि अगर स्थिति जल्द नहीं सुधरी तो 10 लाख नौकरियां अकेले ऑटोमोबाइल सेक्टर में ही जा सकती हैं।

यह राहतकारी है कि मोदी सरकार न केवल उद्योग-व्यापार की चिंताओं का समाधान करने के लिए सक्रिय हो रही है, बल्कि ऐसे संकेत भी दे रही है कि वह विदेशी निवेशकों पर कर अधिभार पर नए सिरे से विचार कर रही है। यह समय की मांग भी है, क्योंकि विदेशी निवेशकों पर कर अधिभार लगाने का नकारात्मक असर दिखने लगा है। इससे इन्कार नहीं कि उद्योग-व्यापार जगत का मनोबल बढ़ाने की जरूरत है, लेकिन इसी के साथ यह भी ध्यान रहे कि आज की सबसे बड़ी समस्या दो नंबर की अर्थव्यवस्था है। पहले नोटबंदी और फिर जीएसटी के जरिये सरकार ने दो नंबर की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन इन दोनों कदमों के कारण कारोबार जगत को तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ा। हालांकि सरकार के पास दो नंबर वाले तौर-तरीके अपनाने वालों के बारे में इतनी जानकारी आ गई है कि वह बिग डेटा के जरिये और आयकर एवं जीएसटी अधिकारियों के सहयोग से अनियंत्रित अर्थव्यवस्था को नियंत्रण में ला सकती है, लेकिन इससे कारोबारी और परेशानी महसूस कर सकते हैं। चूंकि वे आशंकित हैं इसलिए निवेश से हाथ खींच रहे हैं। समानांतर अर्थव्यवस्था को संकुचित करने की कोशिश छोटे-मझोले कारोबारियों तक भी पहुंच सकती है। वास्तव में अभी तो यह शुरुआत है, क्योंकि जीएसटी में अभी तक लिंकेज की घोषणा नहीं हुई है। जिस दिन वह होगी उस दिन से समानांतर अर्थव्यवस्था के बारे में और जानकारी सामने आने लगेगी। इसी तरह यह भी स्पष्ट है कि टैक्स हैवेन माने जाने वाले देशों ने अपने यहां के बैंकों के विदेशी खाताधारकों के बारे में जानकारी देना शुरू कर दिया है। इस सिलसिले के बढ़ने से उन कारोबारियों की मुश्किलें बढ़ना तय है जिन्होंने अनुचित तरीके से विदेशी बैंकों में धन जमा कर रखा है।

हाल में सीएजी ने जीएसटी के तहत दो साल बाद भी सिस्टम आधारित इनपुट टैक्स क्रेडिट, इनवायस मैचिंग न चालू होने पर सरकार को आगाह किया है। फिलहाल आसार यही हैं कि मोदी सरकार दो नंबर की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के अपने इरादे से डिगने वाली नहीं है, लेकिन इसके साथ ही उसे कारोबारियों को भी भरोसा दिलाना जरूरी है। इससे ही माहौल बदलने में आसानी होगी। वैसे भी एक बड़ा वर्ग अपनी पुरानी आदतों को छोड़कर मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था में शामिल हो रहा है। हालांकि इस क्रम में वह आयकर अधिकारियो के निशाने पर भी आ रहा है। अच्छा हो कि यह देखा जाए कि जो व्यापारी पहले गलत तौर-तरीके अपनाए हुए थे और अब उन्हें छोड़ रहे हैं उनके प्रति नरम रवैया अपनाया जाए। ऐसा नहीं है कि हर कारोबारी समानांतर अर्थव्यवस्था चलाने में माहिर है। तमाम कारोबारी कानून के दायरे में रह कर ईमानदारी के साथ अपना काम कर रहे हैं। उन्हें भी शक की निगाह से देखा जाए, इसका कोई औचित्य नहीं। आयकर अधिकारियों को सही और गलत तौर-तरीके अपनाने वाले कारोबारियों में फर्क करना होगा। देश की उन्नति के लिए जितना जरूरी सरकारी नीतियों पर सही तरह से अमल होना है उतना ही यह भी कि कारोबारियों की उद्यमशीलता कायम रहे, क्योंकि देश की पूंजी वही बनाते हैं।

अवधेश राजपूत

response@jagran.com

उधार के सींगों वाली सियासत

हास्य-व्यंग्य

ज्ञान चतुर्वेदी

राजनीति चुनाव के वक्त गाय से सींग उधार ले गई और फिर वापस नहीं किए। अब गाय निहत्थी और राजनीति मरखनी है

राजनीति की कथा लिखने में यही तो आनंद रहता है, कोई झंझट नहीं रहता। राजनीति हर जगह हो सकती है। होती ही है। तो कथा यूं बन रही है कि कहीं राजनीति होती थी। और वहीं गाय भी थी। गाय भी हर जगह होती ही है। यहां भी थी। गाय अक्सर सड़क पर ही मिलती। दूध देती नहीं थी सो कोई उसे पूछता नहीं था। तो कथा में राजनीति के अलावा गाय भी थी। अब ये दो सर्वव्यापी टाइप के चरित्र इस कथा में, कहीं न कहीं तो, कभी न कभी आपस में मिलने ही थे। एक दिन वे दोनों सड़क पर ही रूबरू हो गए।

मुझे तुमसे कुछ प्रश्न पूछने थे? गाय ने राजनीति को सामने खड़ा देखा तो उससे कहा। यूं तो राजनीति की मुलाकात गाय से रोजाना होती ही रहती थी। बयानों में, पोस्टरों में, फतवों में, नारों में, बहस में, पर इस तरह एक दिन वही गाय यूं उसके ठीक सामने पड़ जाएगी, इसका अंदेशा उसे भी नहीं था। राजनीति ने स्थिति से निपटने की ठानी। 'कैसी हो गौमाता?' राजनीति ने उसे प्रणाम किया।

गाय राजनीति की विनम्रता के निहितार्थ समझ गई। उसने पहले ही स्पष्ट चेतावनी देना उचित समझा। 'देख लो, मेरे पास दूध नहीं है।' गाय ने कहा।

राजनीति ने हाथ जोड़ दिए। 'दूध नहीं चाहिए। पेट भरा पड़ा है माता। पेट फूला पड़ा है। गैस बन रही है। दूध के लिए जगह ही नहीं है।' राजनीति ने कहा।

गाय कुछ देर चुप रहकर उसका पेट देखती रही। सारा देश उदरस्थ कर लिया है क्या?

'तूने मेरे सींग वापस नहीं किए रे? 'गाय ने उलाहना के स्वर में कहा।

राजनीति कभी चुनाव के टाइम पर गाय से सींग उधार ले गई थी। फिर उसने वे सींग वापस ही नहीं किए। तबसे गाय तो निहत्थी हो गई और राजनीति मरखनी।

'माता, वैसे भी तू सींगों का इस्तेमाल तो करती नहीं। अपने सिर पर फालतू ही सजाये घूमती रहती थी। लोग तुझसे डरते ही नहीं थे। हमने कम से कम जमाने में तेरे सींगों का भय तो पैदा किया। है कि नहीं? फिर? तेरे पास तो ये सींग फालतू ही पड़े रहते। है न? हमने तो तेरे सींगों की इज्जत ही बढ़ाई है। 'राजनीति ने गर्व से कहा।

गाय ने राजनीति के हाथों में अपने सींग देखकर पूछा, 'पर मेरे ये सींग पहले इतने पैने तो कभी नहीं थे? तुम्हारे हाथों में आते ही ये इतने पैने कैसे हो गए हैं?'

राजनीति मुस्कराने लगी। 'हमारे पास हर चीज को पैना, नुकीला और घातक बनाने की तरकीब आ गई है। इसे ही तो मीडिया वाले आजकल धारदार राजनीति कहने लगे हैं। हम आजकल बयानों, भाषा, धर्म, सेवा और विनम्रता में भी एक खास तरह का पैनापन ले आए हैं।' राजनीति ने गर्व से कहा।

'पर यह तो ठीक नहीं।' गाय ने कहा।

'सब ठीक है।' और तुम अपने सींगों को दोष कतई मत दो। हमारे हाथ में जो भी आता है उसे ही हम बेहद पैना बना सकते हैं। इसकी एक पूरी राजनीतिक मैनेजमेंट की टेक्नोलॉजी बनाई है हमने।' राजनीति ने कहा।

'तुम अपना यह गलत कारोबार बंद क्यों नहीं कर देते? अपनी यह मशीनरी किसी अच्छे काम में लगाओ न?' गाय ने भर्त्सना करते हुए कहा।

'हम अच्छे काम ही तो कर रहे हैं। अपने चारों तरफ तो देखो। जो हो रहा है वह सब अच्छा काम नही है क्या? बता कि लोग आजकल तुझसे डरने लगे हैं कि नहीं? ठीक? अब जो कहीं तू रास्ते में मिल जाए तो सब अदब से पेश आते हैं कि नहीं? गौशाला में तुझे किसी भी हाल में रखा जाए लोग तेरी दुर्दशा पर चुप रहते हैं। गौशाला के बजट में जो भी घपले होते रहें, लोग इसके पवित्र कार्य में दखल देने से घबराने लगे हैं। गौमाता से जुड़ा भ्रष्टाचार भी अब संवेदनशील मुद्दा माना जाता है। बता कि हमारा यह काम अच्छा नही है क्या? देख, तूने तो कभी अपनी ताकत को नहीं पहचाना। राजनीति ने तेरी ताकत को पहचान लिया। है कि नहीं? यह अच्छा काम नहीं है क्या? सो तू अपने ये फालतू के प्रश्न अपने पास ही रख। तू अपना काम कर। हमें अपना करने दे। बस, तू तो अपना नाम हमें दे दे। और अपने सींग हमसे वापस न मांग। वे अब हमारे शस्त्रागार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।'

राजनीति गाय को समझाने लगी। गाय राजनीति के सामने बेबस खड़ी है। वह इसे समझ रही है।

एक कसाईबाड़ा यह भी तो है।

response@jagran.com

ऊर्जा

मातृभाषा का महत्व

भाषा संप्रेषण का एक माध्यम होती है जो शब्द रूप में सिर्फ अभिव्यक्त ही नहीं, बल्कि भाव भी स्पष्ट करती है। नन्हा सा शिशु अपनी जिह्वा पर वही भाषा लाता है जो वह अपने माता-पिता, परिवारजनों को बोलते हुए सुनता है। शिशु को अलग से सिखाने की आवश्यकता नहीं होती, वह स्वयं उस भाषा के शब्दों को बुनना सीख जाता है और बढ़ती उम्र के साथ उसका भाषा ज्ञान समृद्ध होता चला जाता है। विडंबना इस बात की है कि परिवर्तित स्थितियों ने भाषा पर बहस को जन्म दिया है। जीवन में आधुनिकता के प्रवेश ने कई क्षेत्रों के स्वरूपों को प्रभावित करने का कार्य किया है, इसी क्रम में यह आधुनिकता मातृभाषा को मात्र भाषा बनाने की दिशा में कोई कसर शेष नही रखना चाहती, किंतु इन सब के बाद भी हमारी मातृभाषा के महत्व पर कोई आंच नहीं आई है। हिंदी भाषा की समृद्धि से यह प्रत्यक्ष भी होता है।

हिंदी न सिर्फ देश में, वरन दुनियाभर में रहने वाले हिंदुस्तानियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा है, किंतु इस भाषा का उपयोग करने वाले कतिपय विद्वत्जन ही अपनी मातृभाषा के प्रति ग्लानि भाव को अभिव्यक्त करने में संकोच नहीं करते हैं। मातृभाषा के प्रति महात्मा गांधी कहते थे कि हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है। यह पूर्णतः सत्य है, हिंदी में वह क्षमता है जो आंखों से बहती अश्रु धारा का वर्णन इस रूप में करती है कि उसे पढ़ने वाले पाठक को आंसू बहा रहे व्यक्ति की मनःस्थिति का बोध हो जाता है। क्या किसी अन्य भाषा के भाव हृदयतल तक महसूस किए जा सकते है?

हंसी किसी भी भाषा में अभिव्यक्त हो सकती है, किंतु दूसरों की पीड़ा, दर्द का अनुभव मातृभाषा में ही होता है। यह भावों से भावों को जोड़ देती है। समय के साथ कदमताल मिलाते हुए उन्नति और प्रगति के मार्ग पर चल सफल होना भी आवश्यक है। इसलिए अन्य भाषा का ज्ञान होना या उनका कार्य में प्रयोग करना बुरा नहीं है, किंतु अपनी मातृभाषा को निम्नतम मानना किसी भी अर्थ में सही नहीं है।

सौरभ जैन

तथ्य-कथ्य

विभिन्न देशों का जीडीपी

(ट्रिलियन डॉलर में)

एक ट्रिलियन = एक लाख करोड़

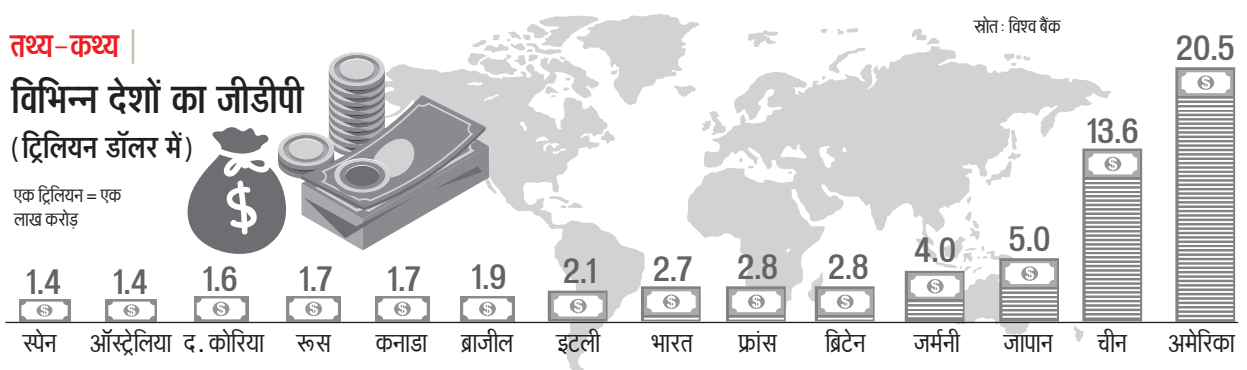

पड़ोस में दिखा पृथ्वी जैसा ग्रह

मुकुल व्यास

घने वायुमंडल वाला यह ग्रह पृथ्वी की तरह अपनी सतह पर पानी को रोक सकता है। उसमें ऐसी ही कई और खूबियां भी हैं

बाहरी ग्रह खोजने में जुटी अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के टेस टेलीस्कोप ने तीन नए ग्रहों का पता लगाया है। इनमें हमारी पहली समीपवर्ती 'सुपर-अर्थ' शामिल है। यह पृथ्वी जैसा ग्रह इंसान के रहने योग्य हो सकता है। इसका नाम जीजे 357डी है जो 31 प्रकाश वर्ष दूर एक तारे का चक्कर काट रही है। यह ग्रह अपने तारे के आवास योग्य क्षेत्र में स्थित है। इसका अर्थ हुआ कि यह अपने तारे के बहुत नजदीक नहीं है और उससे बहुत दूर भी नहीं है। यदि यह तारे के नजदीक होता तो बहुत गर्म होता और बहुत दूर होने पर बहुत ठंडा होता। इस लिहाज से यह अपेक्षाकृत अनुकूल है।

ऐसी स्थिति में ग्रह की सतह पर तरल जल का मौजूद होना संभव है बशर्ते वह ग्रह चट्टानी हो। जीजे 357डी का वायुमंडल कितना घना है और वह तरल जल की मौजूदगी के लिए कितना गर्म है, इसका पता लगाने के लिए अभी और शोध की दरकार है। इस नई खोज से पहले पृथ्वी से 73 प्रकाश वर्ष दूर तीन ग्रहों की खोज की खबर आई थी। इनमें दो ग्रह ऐसे हैं जो ग्रहों के निर्माण में बीच की कड़ी हो सकते हैं। जर्मनी में हाइडलबर्ग स्थित मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोनॉमी की खगोल वैज्ञानिक डायना कोस्साकोवस्की का कहना है कि जीजे 357डी अपने तारे के आवास योग्य क्षेत्र के बाहरी छोर पर स्थित है और यह अपने तारे से उतनी ही ऊर्जा प्राप्त करता है जितनी कि मंगल सूरज से प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि यदि इस ग्रह का वायुमंडल घना है तो वह ग्रह को गर्म रखने के लिए समुचित ऊष्मा संचय कर सकता है।

वैज्ञानिक लीसा काल्टेनेगर का मानना है कि इस ग्रह पर जीवन संभव है। उन्होंने कहा कि यह सचमुच रोमांचक है कि टेस टेलीस्कोप ने हमारे पड़ोस में एक ऐसी सुपर-अर्थ खोजी है जहां जीवन हो सकता है। घने वायुमंडल वाला यह ग्रह पृथ्वी की भांति अपनी सतह पर पानी को रोक सकता है। काल्टेनेगर ने कहा कि निर्माणाधीन नए टेलीस्कोपों की मदद से हम वहां जीवन के संकेत भी ग्रहण कर सकते हैं। जीजे 357डी हर 55.7 दिन में अपने तारे की परिक्रमा करता है और अपने तारे से इसकी दूरी सूरज से पृथ्वी की दूरी की करीब 20 प्रतिशत है। टेस टेलीस्कोप द्वारा खोजे गए तीनों ग्रह जीजे 357 नामक तारे की परिक्रमा कर रहे हैं। यह एम श्रेणी का बौना तारा है जो हमारे सूरज की तुलना में 40 प्रतिशत ठंडा है तथा द्रव्यमान व आकार की दृष्टि से उसका एक-तिहाई है।

टेस टेलीस्कोप ने गत फरवरी में यह पता लगाया कि यह तारा हर 3.9 दिन बाद मंद पड़ जाता है। यह इस बात का संकेत था कि ग्रह इस तारे की परिक्रमा कर रहे हैं। इनमें सबसे नजदीकी ग्रह, जीजे 357बी पृथ्वी से करीब 22 प्रतिशत बड़ा है। वैज्ञानिकों ने इसे 'गर्म पृथ्वी' बताया है। गर्म होने के कारण इस पर जीवन होना नामुमकिन है, लेकिन नजदीकी चट्टानी ग्रह होने के कारण खगोल वैज्ञानिक इसके वायुमंडल की संरचना का अध्ययन अवश्य करना चाहेंगे। इस सिस्टम के मझोले ग्रह, जीजे 357सी का द्रव्यमान पृथ्वी से 3.4 गुना अधिक है और यह अपने तारे की परिक्रमा नौ दिनों में पूरी करता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

राजरंग

सकते में सपा

सकते से उबरने में समय लगता है, लेकिन कितना? यह कोई बता नहीं रहा है। सपा चुनावों में मिली हार से अभी पूरी तरह उबर भी नहीं पाई थी कि उसके जरिये संसद पहुंचे नेता भी उसे एक-एक करके गच्चा देने लगे हैं। दूसरी ओर पार्टी नेतृत्व है कि मानों चादर तानकर सो रहा है। नेतृत्व यही मानकर बैठा हुआ लगता है कि जिसको रहना है रहे, जाना है जाए। अभी तक चुनाव नतीजे की समीक्षा भी नहीं हो पाई है। पार्टी से नाराज नेताओं को लगता है कि नेतृत्व उनकी बातों को तरजीह देना तो दूर उनकी सलाह या किसी तरह के सुझाव को सुनना भी पसंद नहीं करता। सभी फैसले बिना राय-मशविरे के थोप देना आम बात है। मिलने-मिलाने का सिलसिला भी टूट रहा है। भला ऐसे में कब तक साथ रहना मुनासिब होगा। जिसको जहां विकल्प मिल रहा है, वहां का रास्ता नाप रहा है। कहा जा रहा है कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व बसपा प्रमुख की राजनीतिक चोट से उबर नहीं पा रहा है। पहले खुद संभल लें, तब न किसी और की परवाह करें।

चैंबरों की चुप्पी

देश के दोनों प्रमुख उद्योग संगठनों सीआइआइ और फिक्की को इंडिया इंक यानी कंपनी जगत का सबसे मुखर प्रतिनिधि माना जाता है। अपने सदस्यों के हितों के लिए लाबिंग करने के साथ ही अर्थव्यवस्था के समक्ष मंडरा रहे संकट पर चेताते रहना उनकी आदत में शुमार रहा है। इससे जुड़ी चिंता पर वे सरकार को वाकिफ भी कराते रहे हैं। मगर इन दिनों उन्होंने मौन धारण कर रखा है। जहां आर्थिक मंदी की आहट से कई क्षेत्रों में दिक्कत महसूस की जाने लगी है। एजेंसियों व इंडिया इंक की बड़ी शख्सियतों ने मंदी को लेकर अपनी चिंताएं जतानी शुरू कर दी हैं, लेकिन इन चैंबरों ने रहस्यमय चुप्पी साध रखी है। हद तो तब हो गई जब देश के कॉफी किंग वीजी सिद्धार्थ की आत्महत्या पर भी इन चैंबरों की तरफ से न तो शोक जताया गया और न ही कोई कोई टिप्पणी की गई।

मंत्री जी को मिली खुशी

चमक-दमक की दुनिया से ताल्लुक रखने वाले बाबुल सुप्रियो वैसे तो इन दिनों जंगल से जुड़े महकमे में मन रमाए हुए है, लेकिन जैसे ही कोई उन्हें उनके हुनर से आंकता है तो उनमें वह स्वाभाविक खुशी फूट ही पड़ती है। पिछले दिनों कुछ ऐसा ही हुआ। बाघों की गणना से जुड़ी रिपोर्ट जारी करते हुए पीएम ने बाबुल से कहा, अब मंत्री जी बागों में बहार है कि जगह गाएंगे 'बाघों में बहार है...।' पीएम की इस टिप्पणी के बाद से बाबुल फूले नहीं समा रहे हैं। दरअसल बाबुल खुद एक पेशेवर गायक हैं। उनके इस हुनर को पीएम से मिली तारीफ को वह खुद सबसे शेयर करते फिर रहे हैं।

कॉल ड्रॉप का बहाना

यूं तो आए दिन कॉल ड्रॉप की वजह से सरकार के एक मंत्री और कुछ अधिकारियों की किरकिरी होती रहती है, लेकिन शुक्रवार को केंद्र के एक शीर्ष पदाधिकारी को कॉल ड्रॉप ने फजीहत से बचा लिया। हुआ कुछ यूं कि वित्त मंत्रालय ने एक प्रेस ब्रीफिंग बुलाई जिसमें पत्रकारों को सवाल पूछने की अनुमति नहीं थी। पत्रकार जब वित्त मंत्रालय के अधिकारियों के साथ इसे लेकर बहस कर रहे थे, तभी मंत्रालय के आला अफसर वहां आ धमके। आनन-फानन में एक अधिकारी ने मंच पर रखी नेम प्लेट की अदला-बदली की और अपनी सीट छोड़कर उन्हें बैठने को जगह दी। सलाहकार ने बमुश्किल दो मिनट तक अफसरों के साथ कानाफूसी की और मामले की गंभीरता को भांपते हुए मोबाइल पर कॉल लगाने लगे। कुछ देर तक जब कॉल नहीं लगी तो उन्होंने बाहर जाकर कॉल करने के बहाने वहां से खिसकना बेहतर समझा। इसके बाद काफी देर तक वह नहीं लौटे। बहरहाल उनकी कॉल मिली या नहीं यह तो पता नहीं, लेकिन कॉल ड्रॉप के बहाने वह फजीहत से जरूर बच गए।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।